लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-26

राष्ट्र-वाणी

प्रणेता

रामनाथपाठकः 'प्रणयी'

सम्पादकः

प्रो. राधावल्लभः त्रिपाठी

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

नवदेहली

प्रस्तावना

श्रीरामनाथ पाठक 'प्रणयी' ने 'राष्ट्र-वाणी' नामक रचना में अपने संस्कृत गीतों का संग्रह प्रस्तुत किया है। संस्कृत साहित्य में काव्य ग्रन्थों और महान् कवियों का अभाव नहीं है। जिस साहित्य को वेद, रामायण, महाभारत, पुराण जैसे अमर आकार-ग्रन्थों का बाहुल्य है और जिसे भास, भवभूति और कालिदास-जैसे विश्व कवियों की शाश्वत रचनाएँ मिली हैं, उसकी समृद्धि के सम्बन्ध में प्रश्न ही क्या? किन्तु फिरभी इतना तो अवश्य कहा जायगा साम गान की वैदिक प्रथा जिसमें गेयता को विशिष्टता को आधार मानकर छन्दों की सृष्टि की गई हो, पीछे चलकर लुप्त-सी हो गई; और समग्र पश्चाद्वर्त्ती साहित्य में जयदेव के 'गीतगोविन्द' के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रन्थ नही जिसे सफल गीत काव्य कहा जा सके।

'राष्ट्र-वाणी' की कविताएँ इस दृष्टि से अपना निज महत्त्व रखती हैं। ये सोलह या चौदह मात्राओं में लिखी गई हैं और आज कल के प्रचलित रागों या तालों में बड़ी ही आसानी से परिणत करके गाई जा सकती हैं। कविताओं का विषय भी आधुनिक है और मुख्य देश, देश की प्राकृतिक निधि, देशभक्ति एवं राष्ट्र-प्रेम मञ्जुल भावनाओं के आधार पर रची गई हैं। इन कविताओं की भाषा सरल एवं हृदयग्राही है: और संस्कृत का अल्पज्ञान रखनेवाला व्यक्ति भी इन्हें कुछ ही अवधारणा के सहारे समझ सकता है। यों तो संस्कृत की कोमलकान्त पदावली विश्व विश्रुत है ही, इन गीतों के माध्यम से वह और भी निखर पड़ी है।

मैं आशा करता हूँ कि 'प्रणयी' जी की ये रचनाएँ सहृदय हृदयों के द्वारा समादर पायेंगी और इनका उपयुक्त स्वागत होगा। शिक्षा-संस्थाओं के

४

वन्दी प्रविशति कारागारे!

अरुण-किरण-कृत-राग-विभाते,
वहति मलय-गिरि-मञ्जुल-वाते,
वद्ध-शयो धृत-शिति-परिधानो-
दण्ड्यो नृपति-विरुद्धाचारे।
वन्दी प्रविशति कारागारे!

गोपायेत्को जननीमधुना,
सिञ्चेत्कल्पलतां को मधुना,
एवमशेष-स्मृति-मूर्च्छितधीः-
प्लवमानोऽमितमौन-विचारे!
वन्दी प्रविशति कारागारे!

स्मारं-स्मारं कुटी-निवासान्,
क्षुत्तृड्विकलान् मुक्तोच्छ्वासान्,
गायन् करुणगीतमयि! दृग्जल!
वह, चल, चञ्चल! पारावारे।
वन्दी प्रविशति कारागारे!

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नवदेहली-110058